करोड़पति बनने को ललचाता दिवालिया महानायक

ए.बी.सी.एल. (अमिताभ बच्चन कारपोरेशन लिमिटेड) का दिवाला पिटने के बाद अपने डूबते मनोरंजन कारोबार को बचाने का नुस्खा बीते जमाने के सुपर स्टार को आखिर मिल ही गया। स्टार टी.वी. चैनल पर अमिताभ बच्चन की 'एंकरशिप' में विगत 3 जुलाई से चल रहा सीरियल 'कौन बनेगा करोड़पति' (के.बी.सी.) सुपर हिट हो गया है और पुरस्कार आधारित सीरियलों के सारे कीर्तिमानों को ध्वस्त कर रहा है। मीडिया विशेषज्ञों का आकलन है कि दो दुखियारों (अमिताभ और स्टार टीवी चैनल) के मिलन से पैदा हुए के.बी.सी. कार्यक्रम से दोनों के गर्दिश के दिन दूर हो जायेंगे।

1996 में बंगलोर में मिस वर्ल्ड स्पर्द्धा के आयोजन, बैंडिट क्वीन, बाम्बे, सजा-ए-काला पानी के वितरण और तेरे मेरे सपने, नाम क्या है? और मेजर साब जैसी फिल्मों के निर्माण से जुड़ी ए.बी.सी.एल. कम्पनी 70 करोड़ रुपये से अधिक के घाटे में चली गयी थी। दूरदर्शन का भी ए.बी.सी.एल. पर 17.65 करोड़ रुपये का बकाया हो चुका था। इस झटके से उबरने में 'बिग बी' ने सत्ता के गलियारों में अपनी पहुंच का भरपूर फायदा उठाया। ए.बी.सी.एल. को बीमार घोषित करवाकर' बायफर' (बोर्ड ऑफ इण्डस्ट्रियल एण्ड फायनेंशियल रिकन्सट्रक्शन) के हवाले कर अपनी डूबती कश्ती को बचाने की कोशिश के साथ ही दूरदर्शन से भी यह समझौत करवाने में अमिताभ ने सफलता हासिल कर ली थी कि उसके कर्जे कम्पनी किश्तों में चुका दे। फिर भी केनरा बैंक और इलाहाबाद बैंक के भारी कर्जे अभी बाकी थे। इलाहाबाद बैंक ने तो अमिताभ के प्रिय बंगले 'प्रतीक्षा' और दो अन्य बंगलों पर अदालत की मदद से रिसीवर तक बैठा रखा है। इन दुश्वारियों में डूबती-उतराती अमिताभ की कश्ती को आखिर पतवार मिल ही गयी। 130 एपिसोड की के.बी.सी. की एक श्रृंखला के लिए अमिताभ बच्चन फिलहाल 15 करोड़ रुपये कमा चुके हैं। जाहिर है सीरियल की सफलता से टीवी पर्दे पर अमिताभ का बाजार भाव काफी चढ़ चुका है और नये-नये आफरों की झड़ी लग जायेगी।

उधर 'स्टार' चैनल को भी अपनी मन्दी के दिनों से उबरने के लिए जरूरी 'किक' मिल गयी है। टीवी चैनल युद्ध में सबसे आगे रहा स्टार चैनल पिछले दो-तीन वर्षों में खिसककर तीसरे स्थान पर पहुंच गया था। विज्ञापनों से कमाई के मामले में 'सोनी' और 'जी' स्टार से काफी आगे निकल चुके थे। ऐसे में के.बी.सी. की सफलता ने 'स्टार' के फिर से अच्छे दिनों का रास्ता खोल दिया है। कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए बजाज, एल.जी., डिटॉल, कॉलगेट जैसे बड़े निर्माताओं से विज्ञापन के एवज में 'स्टार' 30 करोड़ रुपये की कमाई कर चुका है। कार्यक्रम की सफलता के बाद 'स्टार' ने पहले से ही बढ़ी विज्ञापन दरों को और बढ़ाने का फैसला कर लिया है। एक अनुमान के अनुसार इस कार्यक्रम से 'स्टार' कुल 175 करोड़ रुपये की कमाई करेगा जबकि सेट तैयार करने, अमिताभ बच्चन की मजदूरी देने, प्रचार-प्रसार एवं अन्य विविध तकनीकी खर्चों को मिलाकर सिर्फ 75 करोड़ रुपये खर्च होंगे। जाहिर है, अमिताभ को लेकर खेला गया जुआ स्टार के लिए लकी साबित हो गया है। अमिताभ का जादू दर्शकों पर एक बार फिर चल गया है।

आखिर जादू क्यों नहीं चलता? कार्यक्रम के निर्माता-निर्देशकों की बाजारू सूझ-बूझ को दाद देनी होगी। उन्होंने काफी सटीक अनुमान कर लिया कि जिस तरह अपने पहले अवतार के दौरान अमिताभ ने समाज के दबे-कुचले लोगों की दबी हसरतों को 'महानायक' बनकर बड़े पर्दे पर अकेले ही पूरा कर डालने में कामयाबी हासिल की थी, छोटे पर्दे पर भी किसी न किसी रूप में उसे दुहराया जा सकता है। सो, उन्होंने फार्मूला ढूंढ़ निकाला। बिना हर्रे-फिटकरी के करोड़पति कौन नहीं बनना चाहेगा आजकल? चाहे दफ्तर के चपरासी-बाबू हों या मुख्य कार्यकारी अधिकारी—पैसे की माया के फेर में कौन नहीं पड़ना चाहेगा? इसलिए, प्रतियोगिता की आरम्भिक मंजिलों में सवाल ऐसे रखे गये, जिसका जवाब थोड़ा-बहुत सामान्य ज्ञान रखने वाला भी आसानी से दे दे। आखिरी सीढ़ी पर पहुंचकर करोड़पति चाहे न बन पाये, लखपति और हजारपति तो बन ही सकते हैं। इस लालसा में प्रतियोगिता में शामिल होने के इच्छुकों से फोन की घण्टियां अविराम-अहर्निश घनघना रही हैं। रूपर्ट मर्डोक और अमिताभ बच्चन के साथ फोन कम्पनियां भी मालामाल हो रही हैं।

धन्य है पूंजी का खेल। करोड़पति-लखपति-हजारपति बनने की चाह रखने वालों की आत्मा में पूंजीवाद का यह नारा जरूर गूंज रहा होगा—लालच जिन्दाबाद। प्रतियोगिता में शामिल बहुतेरे लोग हो सकता है कि फूटी कौड़ी भी न पायें। लेकिन क्या हुआ? और कुछ नहीं तो अपने दूसरे अवतार में 'बिग बी' का दरस-परस और छूना-छाना तो हो जायेगा। मर्त्यलोक में आना धन्य हो जायेगा। जो प्रतियोगिता में नहीं शामिल हैं, उनका भी सौभाग्य क्या कम है कि वे हफ्ते में चार दिन पूरे-पूरे पचास मिनट (मुए विज्ञापन दस मिनट खा जाते हैं) तक 'बिग बी' का दर्शन-सुख हासिल कर रहे हैं। साक्षात न सही, दूरदर्शन पर ही सही।

● मुक्तिबोध मंच, पन्तनगर

गुर्दों की खेती

दिसम्बर 1997 में तेलंगाना के किसानों ने कपास की फसल में 'बॉलवॉर्म' के भीषण प्रकोप से तंग आकर, उन कीटों पर बेअसर रहे कीटनाशकों का सेवन कर अपनी जिन्दगी को समाप्त करने की राह पकड़ी थी। तब इस मुद्दे पर तत्कालीन व्यवस्था के पुर्जों ने तमाम फौरी तथा धूर्ततापूर्ण कारण सुझाने शुरू कर दिये थे। आज भी किसानों की आत्महत्याओं का दौर थमा नहीं है। फसल खराब होने, कर्जे की अदायगी में असफलता, सम्पत्तिहीनता की वजह से सामाजिक प्रतिष्ठा में ह्रास आदि कारणों से दिसम्बर 19997 में आन्ध्र प्रदेश से शुरू हुआ किसानों की आत्महत्याओं का सिलसिला कनार्टक, महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश हर जगह फैल चुका है। इन आत्महत्याओं के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं की पड़ताल करने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय शोधकर्ताओं का एक समूह यह साफ तौर पर मानता है कि इनकी मुख्य वजहें मुद्रास्फीति तथा आर्थिक उदारीकरण हैं। इसी सन्दर्भ में बात करते हुए समाजशास्त्री आशीष नन्दी कहते हैं : "अब किसान संगठित होकर रैलियां और धरने नहीं करते हैं बल्कि वे चुपचाप आत्महत्या कर लेते हैं।"

गौरतलब है कि इन आत्म हत्याओं के दौरान ही न केवल आन्ध्र प्रदेश में विधान सभा चुनाव

सम्पन्न हुए बल्कि इस दुर्गति के लिए सीधे जिम्मेदार व्यवस्था पोषक व 'साइबर' नायक चन्द्रबाबू नायडू फिर से प्रचण्ड बहुमत के साथ सत्ता पर सवार हुए। मास-मीडिया के मूढ़ चन्द्र बाबू नायडू की चुनावी सफलता का श्रेय उनके ''सुशासन'' और तकनीकी लटकों-झटकों को देते हैं और उन्हें 'साइबराबाद' का मुख्य कार्यकारी मानते हैं जो कि अपनी सरकार को सूचना व संचारतंत्र द्वारा चलाना चाहते हैं।

जब एक तरफ हैदराबाद अधुनातन तकनीकी शब्दावली, विश्व के महाबली नेता के भाषणों से बलबला रहा था, उसी समय आन्ध्र के किसानों के समक्ष पूंजीवाद के सेवक विज्ञान का जन-विरोधी चेहरा और भी घिनौने रूप में नुमाया हो उठा। कर्ज में डूबे हुए इस प्रदेश के किसानों से कर्ज की वसूली को सम्भव बनाने के निमित्त विज्ञान के एक और टहलुए—चिकित्सक परिदृश्य पर बौद्धिक वेश्यावृत्ति करते नजर आये। इन चिकित्सकों की मदद से गुंटूर जिले के रेन्टाचिन्टाल गांव के 26 किसानों ने अपने गुर्दे एक ऐसे व्यक्ति को बेच दिये जो कि मानव अंगों का ही व्यापार करता है। इन किसानों के अतिरिक्त 100 से अधिक अन्य किसान भी अपने गुर्दे बेचना चाहते थे तथा आपरेशन से पहले चिकित्सकीय परीक्षण के लिए हाजिर भी हुए थे।

दरअसल कोई भी प्रौद्योगिकी हो—संचार, सूचना या चिकित्सा—पूंजीवादी व्यवस्था में सभी वैज्ञानिक कार्यकलाप पूंजी के चाकर हो चुके हैं। यही वजह है कि एक चिकित्सक, मात्र भुगतान पाने पर तनिक भी सोचे बिना न केवल 26 गुर्दे निकाल देता है बल्कि व्यापारी के लिए पैक भी कर देता है मानो यह मुर्गी के 26 अण्डे हों। यहां तक कि एक ही प्रौद्योगिकी पूंजीवादी व्यवस्था के विविध पायदानों पर खड़े लोगों से भिन्न-भिन्न बरताव करती है। यही वजह है कि हैदराबाद को 'साइबराबाद' बनाने वाली बुनियादी सुविधा—बिजली की 'लो वोल्टेज' आपूर्ति ही कुछ किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर कर चुकी है।

भत: एक बार फिर यही तथ्य साफ तौर पर उभरता है कि पूंजी की दुम से बंधा विज्ञान मानवीय संवेदनाशून्य और अन्तत: जन विरोधी ही हो सकता है।

● मुक्तिबोध मंच, पन्तनगर

स्वयंसेवी संगठनों से सावधान

(पृष्ठ 21 का शेष)

एन.जी.ओ. तंत्र का आज हमारे आम जीवन में काफी विस्तार होता जा रहा है। कुकुरमुत्तों की तरह स्वयंसेवी संगठन आज गली-मुहल्लों तक में उग रहे हैं। जो भी थोड़े दिन एन.जी. ओ. में काम करने का अनुभव प्राप्त कर ले रहा है, प्रोजेक्ट कांख में दबाये घूम रहा है—इस उम्मीद में कि कभी तो किस्मत का तारा चमकेगा। इसमें कोई भ्रम नहीं होना चाहिए कि ऐसे संगठन आज ठगों, भ्रष्टाचारियों और धोखेबाजों का स्वर्ग बने हुए हैं। **ये क्रान्तिकारी शक्ति होने का भ्रम पैदा कर समाज के उन्नत तत्वों को खींच रहे हैं। तमाम ईमानदार नौजवान समाज-सेवा के भ्रमों का शिकार हो इनके चंगुल में फंस रहे हैं और ये संस्थाएं उनकी संवेदनशीलता और सदिच्छाओं का भरपूर दुरुपयोग कर रही हैं।**

आज 'सहयोग' जैसी लाखों पतित एवं घृणास्पद स्वयंसेवी संस्थाएं भारत में सक्रिय हैं और अपने साम्राज्यवादी आकाओं के मंसूबों को पूरा करने और उनके सिंहासन को बचाये रखने के काम में लगी हुई हैं। **ऐसे में आज नौजवानों के लिए यह बेहद जरूरी है कि वे एन.जी.ओ. के साम्राज्यवादी कुचक्र को समझें और यह समझें कि साम्राज्यवादियों की छत्रछाया में और उनके टुकड़ों पर पलने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं का वेतनभोगी बनकर समाज को नहीं बदला जा सकता। समाज में कोई भी परिवर्तन सिर्फ और सिर्फ जनता के खून-पसीने के दम पर और उसके द्वारा शोषक-उत्पीड़क व्यवस्था के ध्वंस द्वारा ही लाया जा सकता है।**

इतिहास के साथ एक बदसलूकी यह भी

(पृष्ठ 26 का शेष)

दी।'' (संस्मृतियां पृ. 97)

उक्त उद्धरण न केवल राजगुरू की संस्कृत शिक्षा की कथित 'तर्कतीर्थ' उपाधि वरन् तत्कालीन संस्कृत शिक्षा के पुरोधाओं की लोलुपता और गर्हित निकृष्टता की पोल भी खोल देता है। क्या राजगुरू संस्कृत शिक्षा की वकालत कर इन घाघ मकड़ों का जाल मजबूत करने का प्रयास कर भी सकते थे? इसका निर्णय पाठकों पर छोड़ता हूं।

फिर 'संस्कृति सत्य' के इस प्रयास का निहितार्थ क्या है? यही कि राजगुरू जैसे प्रखर समाजवादी को पुनरुत्थानवादी साबित कर अपने कठमुल्ला उद्देश्यों में विश्वसनीयता पैदा की जाये तथा शहीदों के बीच भी कृत्रिम अलगाव पैदा किया जाये।

एक बार हम फिर शिववर्मा वर्णित राजगुरू की जीवनी पर आते हैं—''छह वर्ष की अवस्था में राजगुरू के पिता का देहान्त हो गया था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में उन्होंने घर छोड़ दिया था। उनकी संस्कृत शिक्षा का अन्त आप ऊपर पढ़ चुके हैं। इसके बाद चार-पांच वर्षों तक क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में ही नहीं रहे वरन् सक्रिय रहे। उस दौरान उनकी सक्रियता का अहसास इसी से हो जाता है कि उस दौरान दल के सबसे अहम ऐक्शन—'साण्डर्स वध' के मुख्य कर्ता थे। इसके बीच में वे कुछ समय एक म्यूनिसपल स्कूल के 'ड्रिल मास्टर' भी रहे थे।'' अब वचनेश त्रिपाठी जी ने तय कर लिया कि राजगुरू संस्कृत का प्रचार करें तो उन्हें करना ही पड़ा। अफसोस होता है कि जिस व्यक्ति को जीते जी समूची ब्रिटिश सत्ता नहीं झुका सकी, मौत के बाद एक कलमनवीस अपनी अंगुली के झटकों से उसके व्यक्तित्व में मनचाहे तोड़-मरोड़ पैदा कर रहा है।

वचनेश त्रिपाठी जी! जिस प्रकार पांच गोलियां जाया होने पर आप दुखी हो रहे हैं, मुझे लगा जैसे सरकारी 'आडिटरों' का दल हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ के दस्तावेजों की जांच कर रहा है तथा उसकी जांच में यह नुक्स मिला कि भगतसिंह पर पांच गोलियां बकाया हों। हमारा कहना यह है कि वचनेश जी कि भगतसिंह की क्रान्तिकारी परम्परा के उत्तराधिकारियों पर केवल पांच गोलियां ही नहीं इस मुल्क के मजलूमों-गरीबों की मुकम्मल आजादी ही बकाया है, जिसका जिम्मा उन्हें इतिहास ने सौंप रखा है। साथ ही यह जिम्मा भी कि गोएबल्स के उत्तराधिकारियों को इतनी गहराई में दफ्न कर दें कि वे फिर से कब्र से बाहर न आ सकें। ●

इंकलाब के लिए जरूरी है एक इंकलाबी पार्टी
और इंकलाबी पार्टी के लिए जरूरी है एक इंकलाबी अखबार
पढ़िए
नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक **बिगुल** मूल्य : तीन रुपए
सम्पादकीय कार्यालय : 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ